श्री राम चालीसा

इन पाठों के बारे में

स्रोत	हर पाठ अपने स्रोत, परम्परा और संस्करण के साथ छपा है। अन्य परम्पराओं और संस्करणों में शब्दों में थोड़ा अन्तर हो सकता है।
लिप्यन्तरण	रोमन पंक्ति देवनागरी से बना IAST लिप्यन्तरण है (ā = दीर्घ आ, ṃ = अनुस्वार, ḥ = विसर्ग, ś/ṣ = श/ष, c = च)। हिन्दी, अवधी और ब्रज पाठों में शब्द के अन्त का मौन 'अ' नहीं लिखा जाता। लिप्यन्तरण में वैदिक स्वर नहीं दिखते।

श्री राम चालीसा

प्रकार	चालीसा
देवता	भगवान श्रीराम
संस्करण	मिलान किया गया पाठ
परम्परा	वैष्णव
स्रोत	51 चालीसा संग्रह (आरतियों सहित) — रणधीर प्रकाशन, हरिद्वार (2004) — Scan pages 15–18
आभार	पाठ मुद्रित प्रति के स्कैन से लिया गया। सार और अर्थ: उद्योग ज्योतिष सम्पादकीय टीम।
कॉपीराइट	Traditional devotional text in wide circulation. The poet named in the closing verse is a traditional attribution; no mo

श्री रघुवीर भक्त हितकारी ।

śrī raghuvīr bhakta hitakārī |

सुनि लीजै प्रभु अरज हमारी ॥ १ ॥

suni līje prabhu araj hamārī || 1 ||

निशि दिन ध्यान धरै जो कोई ।

niśi din dhyān dharai jo koī |

ता सम भक्त और नहिं होई ॥ २ ॥

tā sam bhakta aur nahiṃ hoī || 2 ||

ध्यान धरे शिवजी मन माहीं ।

dhyān dhare śivajī man māhīṃ |

ब्रह्मा इन्द्र पार नहिं पाहीं ॥ ३ ॥

brahmā indra pār nahiṃ pāhīṃ || 3 ||

जय जय जय रघुनाथ कृपाला ।

jay jay jay raghunāth kṛpālā |

सदा करो सन्तन प्रतिपाला ॥ ४ ॥

sadā karo santan pratipālā || 4 ||

दूत तुम्हार वीर हनुमाना ।

dūt tumhār vīr hanumānā |

जासु प्रभाव तिहूँ पुर जाना ॥ ५ ॥

jāsu prabhāv tihūm pur jānā || 5 ||

तव भुज दण्ड प्रचण्ड कृपाला ।

tav bhuj daṇḍa pracaṇḍa kṛpālā |

रावण मारि सुरन प्रतिपाला ॥ ६ ॥

rāvaṇ māri suran pratipālā || 6 ||

स्रोत-सहित पारम्परिक पाठ। किसी निश्चित परिणाम का दावा नहीं।

तुम अनाथ के नाथ गोसाईं ।

tum anāth ke nāth gosāīṃ |

दीनन के हो सदा सहाई ॥ ७ ॥

dīnan ke ho sadā sahāī || 7 ||

ब्रह्मादिक तव पार न पावैं ।

brahmādik tav pār na pāvaiṃ |

सदा ईश तुम्हरो यश गावैं ॥ ८ ॥

sadā īś tumharo yaś gāvaiṃ || 8 ||

चारिउ वेद भरत हैं साखी ।

cāriu ved bharat haiṃ sākhī |

तुम भक्तन की लज्जा राखी ॥ ९ ॥

tum bhaktan kī lajjā rākhī || 9 ||

गुण गावत शारद मन माहीं ।

guṇ gāvat śārad man māhīṃ |

सुरपति ताको पार न पाहीं ॥ १० ॥

surapati tāko pār na pāhīṃ || 10 ||

नाम तुम्हार लेत जो कोई ।

nām tumhār let jo koī |

ता सम धन्य और नहिं होई ॥ ११ ॥

tā sam dhanya aur nahiṃ hoī || 11 ||

राम नाम है अपरम्पारा ।

rām nām hai aparampārā |

चारिउ वेदन जाहि पुकारा ॥ १२ ॥

cāriu vedan jāhi pukārā || 12 ||

गणपति नाम तुम्हारो लीन्हौ ।

gaṇapati nām tumhāro līnhau |

तिनको प्रथम पूज्य तुम कीन्हौ ॥ १३ ॥

tinako pratham pūjya tum kīnhau || 13 ||

शेष रटत नित नाम तुम्हारा ।

śeṣ raṭat nit nām tumhārā |

महि को भार शीश पर धारा ॥ १४ ॥

mahi ko bhār śīś par dhārā || 14 ||

फूल समान रहत सो भारा ।

phūl samān rahat so bhārā |

पाव न कोउ तुम्हारो पारा ॥ १५ ॥

pāv na kou tumhāro pārā || 15 ||

भरत नाम तुम्हरो उर धारो ।

bharat nām tumharo ur dhāro |

तासों कबहु न रण में हारो ॥ १६ ॥

tāsoṃ kabahu na raṇ meṃ hāro || 16 ||

स्रोत-सहित पारम्परिक पाठ। किसी निश्चित परिणाम का दावा नहीं।

नाम शत्रुहन हृदय प्रकाशा ।

nām śatruhan hṛday prakāśā |

सुमिरत होत शत्रु कर नाशा ॥ १७ ॥

sumirat hot śatru kar nāśā || 17 ||

लषन तुम्हारे आज्ञाकारी ।

laṣan tumhāre ājñākārī |

सदा करत सन्तन रखवारी ॥ १८ ॥

sadā karat santan rakhavārī || 18 ||

ताते रण जीते नहिं कोई ।

tāte raṇ jīte nahiṃ koī |

युद्ध जुरे यमहूं किन होई ॥ १९ ॥

yuddha jure yamahūṃ kin hoī || 19 ||

महालक्ष्मी धर अवतारा ।

mahālakṣmī dhar avatārā |

सब विधि करत पाप को छारा ॥ २० ॥

sab vidhi karat pāp ko chārā || 20 ||

सीता नाम पुनीता गायो ।

sītā nām punītā gāyo |

भुवनेश्वरी प्रभाव दिखायो ॥ २१ ॥

bhuvaneśvarī prabhāv dikhāyo || 21 ||

घट सों प्रकट भई सो आई ।

ghaṭ soṃ prakaṭ bhaī so āī |

जाको देखत चन्द्र लजाई ॥ २२ ॥

jāko dekhat candra lajāī || 22 ||

सो तुमरे नित पाँव पलोटत ।

so tumare nit pām□v paloṭat |

नवों निद्धि चरणन में लोटत ॥ २३ ॥

navoṃ niddhi caraṇan meṃ loṭat || 23 ||

सिद्धि अठारह मंगलकारी ।

siddhi aṭhārah maṃgalakārī |

सो तुम पर जावै बलिहारी ॥ २४ ॥

so tum par jāvai balihārī || 24 ||

औरहु जो अनेक प्रभुताई ।

aurahu jo anek prabhutāī |

सो सीतापति तुमहिं बनाई ॥ २५ ॥

so sītāpati tumahiṃ banāī || 25 ||

इच्छा ते कोटिन संसारा ।

icchā te koṭin saṃsārā |

रचत न लागत पल की वारा ॥ २६ ॥

racat na lāgat pal kī vārā || 26 ||

स्रोत-सहित पारम्परिक पाठ। किसी निश्चित परिणाम का दावा नहीं।

जो तुम्हरे चरणन चित लावै ।

jo tumhare caraṇan cit lāvai |

ताकी मुक्ति अवसि हो जावै ॥ २७ ॥

tākī mukti avasi ho jāvai || 27 ||

जय जय जय प्रभु ज्योति स्वरूपा ।

jay jay jay prabhu jyoti svarūpā |

निर्गुण ब्रह्म अखण्ड अनूपा ॥ २८ ॥

nirguṇ brahma akhaṇḍa anūpā || 28 ||

सत्य सत्य सत्य ब्रत स्वामी ।

satya satya satya brat svāmī |

सत्य सनातन अन्तर्यामी ॥ २९ ॥

satya sanātan antaryāmī || 29 ||

सत्य भजन तुम्हरो जो गावै ।

satya bhajan tumharo jo gāvai |

सो निश्चय चारों फल पावै ॥ ३० ॥

so niścay cāroṃ phal pāvai || 30 ||

सत्य शपथ गौरिपति कीन्हीं ।

satya śapath gauripati kīnhīṃ |

तुमने भक्तिहिं सब सिद्धि दीन्हीं ॥ ३१ ॥

tumane bhaktihiṃ sab siddhi dīnhīṃ || 31 ||

सुनहु राम तुम तात हमारे ।

sunahu rām tum tāt hamāre |

तुमहिं भरत कुल पूज्य प्रचारे ॥ ३२ ॥

tumahiṃ bharat kul pūjya pracāre || 32 ||

तुमहिं देव कुल देव हमारे ।

tumahiṃ dev kul dev hamāre |

तुम गुरुदेव प्राण के प्यारे ॥ ३३ ॥

tum gurudev prāṇ ke pyāre || 33 ||

जो कुछ हो सो तुम ही राजा ।

jo kuch ho so tum hī rājā |

जय जय जय प्रभु राखो लाजा ॥ ३४ ॥

jay jay jay prabhu rākho lājā || 34 ||

राम आत्मा पोषण हारे ।

rām ātmā poṣaṇ hāre |

जय जय जय दशरथ दुलारे ॥ ३५ ॥

jay jay jay daśarath dulāre || 35 ||

ज्ञान हृदय दो ज्ञान स्वरूपा ।

jñān hṛday do jñān svarūpā |

नमो नमो जय जगपति भूपा ॥ ३६ ॥

namo namo jay jagapati bhūpā || 36 ||

स्रोत-सहित पारम्परिक पाठ। किसी निश्चित परिणाम का दावा नहीं।

धन्य धन्य तुम धन्य प्रतापा ।

dhanya dhanya tum dhanya pratāpā |

नाम तुम्हार हरत संतापा ॥ ३७ ॥

nām tumhār harat saṃtāpā || 37 ||

सत्य शुद्ध देवन मुख गाया ।

satya śuddha devan mukh gāyā |

बजी दुन्दुभी शंख बजाया ॥ ३८ ॥

bajī dundubhī śaṃkh bajāyā || 38 ||

सत्य सत्य तुम सत्य सनातन ।

satya satya tum satya sanātan |

तुम ही हो हमारे तन मन धन ॥ ३९ ॥

tum hī ho hamāre tan man dhan || 39 ||

याको पाठ करे जो कोई ।

yāko pāṭh kare jo koī |

ज्ञान प्रकट ताके उर होई ॥ ४० ॥

jñān prakaṭ tāke ur hoī || 40 ||

आवागमन मिटै तिहि केरा ।

āvāgaman miṭai tihi kerā |

सत्य वचन माने शिव मेरा ॥ ४१ ॥

satya vacan māne śiv merā || 41 ||

और आस मन में जो होई ।

aur ās man meṃ jo hoī |

मनवांछित फल पावे सोई ॥ ४२ ॥

manavāṃchit phal pāve soī || 42 ||

तीनहूं काल ध्यान जो ल्यावैं ।

tīnahūṃ kāl dhyān jo lyāvaiṃ |

तुलसी दल अरु फूल चढ़ावैं ॥ ४३ ॥

tulasī dal aru phūl caṛhāvaiṃ || 43 ||

साग पत्र सो भोग लगावैं ।

sāg patra so bhog lagāvaiṃ |

सो नर सकल सिद्धता पावैं ॥ ४४ ॥

so nar sakal siddhatā pāvaiṃ || 44 ||

अन्त समय रघुवर पुर जाई ।

anta samay raghuvar pur jāī |

जहां जन्म हरि भक्त कहाई ॥ ४५ ॥

jahāṃ janma hari bhakta kahāī || 45 ||

श्री हरिदास कहै अरु गावै ।

śrī haridās kahai aru gāvai |

सो बैकुण्ठ धाम को जावै ॥ ४६ ॥

so baikuṇṭha dhām ko jāvai || 46 ||

स्रोत-सहित पारम्परिक पाठ। किसी निश्चित परिणाम का दावा नहीं।

सात दिवस जो नेम कर, पाठ करे चित लाय ।

sāt divas jo nem kar, pāṭh kare cit lāy |

हरिदास हरि कृपा से, अवसि भक्ति को पाय ॥

haridās hari kṛpā se, avasi bhakti ko pāy ||

राम चालीसा जो पढ़े, राम चरण चित लाय ।

rām cālīsā jo paṛhe, rām caraṇ cit lāy |

जो इच्छा मन में करै, सकल सिद्ध हो जाय ॥

jo icchā man meṃ karai, sakal siddha ho jāy ||

अर्थ

चालीसा भक्त-हितकारी श्रीराम से कवि की विनती सुनने की प्रार्थना करती है। इसमें राम-नाम की महिमा है — जिसे शिव ध्याते हैं, जिससे गणेश प्रथम पूज्य बने और शेष पृथ्वी का भार उठाते हैं; भरत, शत्रुघ्न और लक्ष्मण के नाम, जो विजय देते हैं; और सीता जी लक्ष्मी रूप में। श्रीराम को निर्गुण, सनातन सत्य कहा गया है, और पाठ से ज्ञान, मनोकामना-पूर्ति और अन्त में रघुवर के धाम की प्राप्ति बताई गई है।

स्रोत-सहित पारम्परिक पाठ। किसी निश्चित परिणाम का दावा नहीं।

इस दस्तावेज़ के बारे में

इस दस्तावेज़ के पाठ सार्वजनिक (पब्लिक डोमेन) पारम्परिक भक्ति पाठ हैं या हमारी टीम द्वारा लिखे गए हैं, और अपने दर्ज स्रोत व संस्करण के साथ छपे हैं।

अर्थ हमारे शब्दों में संक्षिप्त व्याख्याएँ हैं, विद्वत्तापूर्ण अनुवाद नहीं। किसी पाठ के अपने श्लोकों में बताए लाभ पाठ का अंश हैं, गारण्टी नहीं।

कुछ साधनाएँ परम्परा से गुरु-मार्गदर्शन में की जाती हैं। अपनी परम्परा के मार्गदर्शन का पालन करें।